Dr. Mary S. Soreng

H.O.D.
University Department of Kharia
Ranchi University, Ranchi
Jharkhand-834008

Residence

Tete Telong
Kokar, Tiril Basti
Master Lane
Ranchi-834009
Contact No-9934252808

Ref:....................

Date: 28.02.2023

अभिमति पत्र

श्री बासिल किड़ो मेरे निर्देशन में शोध कार्य करना चाहते हैं। इनके शोध का विषय "खड़िया भाषा एवं साहित्य के विकास में विदेशी लेखकों का योगदान" शीर्षक के रूप में है। इनकी शोध–निर्देशिका बनने में मुझे किसी प्रकार की कोई आपत्ति नहीं है।

मैं सहर्ष इनकी शोध निर्देशिका बनने का स्वीकृति पत्र प्रदान करती हूँ।

शोध निर्देशिका

Soreng

डॉ. मेरी एस. सोरेंग
विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर खड़िया विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

H.O.D.
University Department of KHARIA
Ranchi University, Ranchi

<u>खड़िया भाषा एवं साहित्य के विकास में विदेशी लेखकों का योगदान</u>

शोध प्रस्ताव –

भूमिका – संवैधानिक रूप से भारत के राजसंघीय पटल पर झारखण्ड 28 वें राज्य के रूप में दिनांक 15.11.2000 को बिहार से अलग अस्तित्व लेकर बना। यह एक आदिवासी बहुल राज्य है जिसमें अनेक जनजातियां निवास करती हैं। भाषाई दृष्टिकोण से इस राज्य में दो प्रमुख भाषाएं यथा ऑस्ट्रोएषियाटिक और द्रविड़ वर्गीकरण के बोलने वाले लोग पाए जाते हैं। इनमें से भी ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषा परिवार जिन्हें आग्नेय भाषा परिवार भी कहा जाता है के लोग अधिकतर हैं। इस भाषा परिवार में जनसंख्या के अनुसार क्रमशः संताली, मुण्डारी तथा हो भाषा आती है। इन्हीं के साथ अगली भाषा का नाम खड़िया है। खड़िया भाषा एवं साहित्य के विकास की नींव विदेशी लेखकों ने रखा जिसका कालक्रमिक निरंतर विकास होता गया। इस परिप्रेक्ष्य में विदेशी लेखकों के अमूल्य योगदान का चिन्हित करना अपेक्षित है।

खड़िया जाति की अपनी अलग भाषा एवं स्वतंत्र भाषा है जिसे खड़िया भाषा कहा जाता है। स्वतंत्र भाषा होने से इसकी बोली अलग है और इनका अपना अलग संस्कृति और साहित्य भी है। इस राज्य में यूं तो ये अनेक जिलों में छिट पुट पाए जाते हैं परन्तु मुख्यतः सिमडेगा, गुमला और रांची जिले में अवस्थित हैं। इन क्षेत्रों के अलावे इस भाषा को बोलने वाले लोग उड़ीसा के राजगांगपुर, सुन्दरगढ़ सम्बलपुर, मध्यपद्रेश, छतीसगढ़, असम और पश्चिम बंगाल में भी पाए जाते हैं।

खड़िया जनजाति की तीन प्रमुख शाखाएं हैं – दूध खड़िया , डेलकी ख़ड़िया और सबर खड़िया या हिल खड़िया। दूध खड़िया और डेलकी खड़िया की भाषा एवं संस्कृति में समानता पायी जाती है परन्तु सबर खड़िया के साथ नहीं या हम यह कह सकते हैं कि दूध खड़िया और डेलकी खड़ियाओं की भाषा जितनी मिलती है उतनी सबर खड़िया की भाषा और संस्कृति से नहीं मिलती है।

यह बात तो सर्वमान्य है कि खड़िया भाषा ऑष्ट्रोएशियाटिक भाषा परिवार की भाषा है जिसमें संताली , मुण्डारी , हो एवं खड़िया भाषा आते हैं। कुछ विद्वानों का कहना है कि खड़िया भाषा मुण्डारी आपस में बहुत कुछ मिलती जुलती है। कुछ तो यहां तक कहते हैं कि मुण्डारी भाषा से ही निकली है परन्तु खड़िया भाषा भाषी विद्वान ऐसा नहीं मानते हैं। यह इसलिए भी कि अगर मिलती जुलती होती तो मैं जो बचपन से खड़िया बोलनेवाला व्यक्ति होकर कोई मेरे साथ मुण्डारी में बातें करना चाहे तो मैं उसके सवालों का उत्तर देने में असमर्थ होउंगा क्योंकि मुझे उनकी भाषा की समझ नहीं है। यह बात दीगर है कि बातों के कम में मुझे एकाध शब्द समझ में आ जाए। वैसे भी शब्दों का आदान–प्रदान तो आज एक आम बात हो गयी है। यही बात मुण्डारी भाषा बोलने वाले के साथ भी हो सकती है। इसी तरह अगर शब्दकोष की नजरिए से देखेंगे तो उसमें भी काफी भिन्नता नजर आती है।

भाषा शब्द का प्रयोग बहुत व्यापक संदर्भ में होता है। मनुष्य मात्र की प्रत्येक बोली को भाषा कहा जाता है। देश की भाषा को भी भाषा कह सकते हैं। एक पीढ़ी से दूसरी पीढी भाषा का हस्तातंरण होते आया। विदेशी मिशनरियों का भारत आगमन का उद्देश्य धर्म प्रचार ही था फिर भी इन्होंने इस क्षेत्र की भाषाओं के प्रति अपनी रूचि दिखायी और अपनी सेवा और सहानुभूति के साथ साहित्य के क्षेत्र में भी काफी योगदान किया है।

झारखण्ड राज्य में विदेशियों के द्वारा प्रारंभिक काल में किये गए काम जैसा कि संताली में बोडिंग द्वारा , मुंडारी में होफमन द्वारा , कुडुख में बोडसन द्वारा और खड़िया में फ्लोर और डुअर्ट और कई अन्य लोगों के द्वारा भाषा और साहित्य के क्षेत्र में किया हुआ काम मिलता है। खड़िया भाषा को लेकर शुरूआती दौर में सन् 1866 में ई.टी.डाल्टन द्वारा **"द कोल्स ऑफ छोटानागपुर"** में 25 खड़िया शब्दों का संकलन किया जो **"जनरल ऑफ दि एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल"** में देखने को मिलता है। 1872 ई में डाल्टन की पुस्तक डिस्क्रिटिभ ऑफ बंगाल में रखाल दास हलदर से प्राप्त खड़िया शब्दों की सूची प्रस्तुत की गयी जो मुण्डा शब्दों के साथ मिलती जुलती है। डॉ ग्रियर्सन ने खड़िया भाषा को सबसे पहले आग्नेय परिवार की भाषा बताया है। इन्होने अपनी किताब ' **लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ**

इंडिया ' के भाग 4 में खड़िया भाषा को dying language मृतप्राय कहा है जिसका अर्थ यह नहीं है कि यह भाषा लुप्त सी है। उनके इस तरह कहने का तात्पर्य था किइस भाषा के मूल रूप का उपलब्ध न होना और लिखित साहित्य का अभाव। ए.जे.लॉयल ने 1868 में **"रिपोर्ट ऑफ दि एथनोलॉजिकल कमिटि"** में 15 खड़िया शब्दों का क ोश प्रस्तुत किया। एच.पी.ड्राइभर ने 1888 में और 1891 ई में **'जनरल ऑफ दी एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल'** में कोलारियन जातियों असुर ,बिरहोर ,खड़िया पर टिप्पणी लिखी है। एच एच रिसले ने 1891 में अपनी पुस्तक **' द ट्राइब एण्ड कास्टस ऑफ बंगाल'** में कोल या कोल्ह शब्द पर लिखा है जिसमें मुण्डा,उरांव,भूमिज के साथ खड़िया लोगों को आर्यों द्वारा सबोधित किए जाने का जिक्र है। साथ ही यह भी लिखा है कि खड़िया जनजाति पश्चिम की ओर से यहां आए हैं। उन्होंने किड़ो का अर्थ बाघ लिखा है। जे. बी हॉफमन ने 1933 में **"एनसाइक्लोपेडिका मुण्डारिका"** भाग 8 में खड़िया शब्द को लेकर व्याख्या की। सन् 1903 में फादर एल. कार्डोन ने **"द खड़िया एण्ड देयर कस्टम"** में खड़िया जनजाति , उनके रीति रिवाजों और वैवाहिक अनुष्ठानों का परिचय प्रस्तुत किया। एच.फ्लोर, वी.घीसिंग और जी. डुवर्ड ने 1934 ई में अपनी किताब **"डिक्सनरी ऑफ द खड़िया लांग्वेज"** में खड़िया भाषा को लेकर लिखा जो 125 पृष्टों में है। यह खड़िया भाषा का प्रथम शब्दकोश है। जे.पास्टर ने भी 1935 में **"खड़िया हिम्स"** नामक पुस्तक में खड़िया गीतों को लेकर बंगला लिपि में लिखा है। डब्ल्यू.जी.आर्चर ने 1942में अपने किताब **"खड़िया आलोंग"** में खड़िया गीतों को लेकर प्रथम बार देवनागरी में एक संकलन तैयार कर प्रस्तुत किया जिसमें 1528 गीतों और 446 पहेलियां हैं। तथा एच.जे. पिन्नो ने अपनी किताब **"एसेज ऑन फॉनेटिक्स ऑफ लग्वेज हिस्टरी"** में 1965 में अपना योगदान दिया है। इन्होंने अपना योगदान लिपि के दृष्टिकोण से रोमन लिपि में ही कार्य किए हैं। इसे हम इस तरह से भी देख सकते हैं कि खड़िया भाषा का विकास ब्रितानी उपनिवेशवाद के बाद में ही मिलता है। आज के दिन विदेशी लेखकों में जॉन माइकेल पीटरसन का नाम लिया जा सकता है। इन्होंने अपनी पुस्तक " **ए ग्रामर ऑफ खड़िया** " पर

अपना काम किया है जिसमें स्वर विज्ञान , रूप विज्ञान व वाक्य विज्ञान आदि पर प्रकाश डाला गया है।

यह गौरतलब है कि खड़िया भाषा हिन्दी क्षेत्र के लोगों द्वारा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। अतः इसे देवनागरी लिपि में लिखने में बहुत आसानी से देखा जा सकता है। वर्तमान में देवनागरी लिपि में ही अधिकतर खड़िया भाषा और साहित्य के लेखन में किया जाता है।

प्रेरणा –

मेरा जन्म सिमडेगा के एक खड़िया परिवार में हुआ है। जन्म से खड़िया होने के नाते खड़िया भाषा से बचपन से ही मेरा लगाव रहा है जिसका मुझे गर्व है। अपनी पढ़ाई के दौरान और उसके बाद भी खड़िया बोलने वालों से बराबर से मेरा सम्पर्क अपने गुरूजनों और समाज के अगुओं से रहा। उन्होंने अगर अपनी ज्ञान और जीवन दर्शन आने वाली पीढ़ी को न बांटी होती तो क्या होता? यही न कि हम अभी जहां पर अपने को पाते हैं वहां नहीं होते। ये बातें हम किसी भी क्षेत्र को लेकर अपने पूर्वजों के बारे में भी कह सकते हैं। हमारे लिए हमारे मां–बाप की भाषा हमारी भाषा है। आदिवासी भाषाओं के विकास और पुनर्जागरण के लिए हमें सतत प्रयास करते रहने की आवश्यकता प्रतीत होती है। आदिवासी भाषाओं और संस्कृति को लेकर इनके बीच जो हीन भावना है उसे हटाना होगा और यह संभव है उनका ज्ञाता बनने से और इनका ज्ञाता बनने के लिए इनका अध्ययन जरूरी है।

यूं तो अपनी भाषा सीखने और बोलने में मेरे परिवार के लोगों का काफी प्रभाव मुझ पर रहा है जिसका मैं आजीवन आभारी रहूंगा। परन्तु सेवा निवृति के बाद मैं खुलकर स्व. जुलियुस बा' जैसे खड़िया साहित्यकार के सम्पर्क में आया और उनके मार्गदर्शन में खड़िया भाषा की पढ़ाई के लिए ''जनजातीय और क्षेत्रीय भाषा विभाग '' में अपना नामांकन कराया। इनसे सम्पर्क के दौरान मुझे इनकी लिखी किताबें पढ़ने और समझने का मौका

मिला। इसी दरम्यान विदेशी लेखकों की चर्चाएं होती रही जिन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से खड़िया भाषा और साहित्य को समाज के सामने लाने का प्रयास किया। इन्ही से मुझे ''खड़िया भाषा और साहित्य के विकास में विदेशी लेखकों का योगदान '' पर शोध प्रबंध लिखने के लिए प्रेरणा मिली। विदेशी लेखकों के बारे में मेरा सम्पर्क कहने से अपने कॉलेज के जमाने में पद्मभूषण डॉ कामिल बुल्के का नाम मैं ले सकता हूं जो मुझे अपना दामाद सा मानते थे। कालान्तर में डॉ. अनिल वीरेन्द्र कुल्लु एवं डॉ. मेरी एस. सोरेंग के साथ मैंने इस विषय पर चर्चा किया जिन्होंने मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

परिकल्पना –

विकास को झुठलाया नहीं जा सकता है। हम बैसाखी लेकर अधिक दिनों तक नहीं चल सकते हैं। समाज का शिक्षित वर्ग भी अगर अपनी भाषा और साहित्य के प्रति उदासीन नजर आए तो अपनी पहचान और अस्तित्व पर असर तो आना स्वाभाविक है। आए दिन विश्वविद्यालयों में शोध कार्य पर चर्चाएं सुनने को मिलती है कि या तो उनकी संख्या कम है या गुणवता में कमी पायी जाती है। इन्हीं बातों से मेरे मन में एक उत्कंठा हुई कि एक शोध कार्य क्यों न की जाए जिससे भाषा और साहित्य की स्थापना में मील का पत्थर साबित हो सके। अतः इस विषय पर एक खड़िया भाषा भाषी होने से शोध करने का मन बनाया। इससे खड़िया भाषा और साहित्य की आने वाली पीढ़ियों को प्रारंभिक काल के विषय में जानकारी मिलेगी तथा अन्य विषयों पर सोचने का संबल मिलेगा। ऐसे भी भाषा तो किसी की बपौती नहीं होती है इसलिए कोई भी इस क्षेत्र में आकर सहयोग कर सकता है। लोकतंत्र के संदर्भ में या झारखण्ड प्रदेश की भाषाओं और बोलियों के संबंध में विचार करना हो तो यहां की भाषाओं और बोलियों में क्या क्या समानताएं और भिन्नताएं हैं और इनके बारे में विदेशी लेखकों ने क्या लिखा है उन्हें जानना एक स्वस्थ्य और जागरूक समाज के लिए लाभदायक ही रहेगा। आज जब आदिवासी समाज अपनी भाषा, साहित्य और संस्कृति की पहचान की लड़ाई लड़ रहा है यह जरूरी है कि इनल`खकों के माध्यम से हम अपना चेहरा खोजें और अपने को फिर से जानें।

खड़िया भाषा एवं साहित्य के विकास में विदेशी लेखकों के योगदान को चिन्हित करते हुए खड़िया भाषा एवं साहित्य के विविध आयामों का विस्तृत तथा गहन अध्ययन प्रस्तुत करना ताकि भाषा – साहित्य प्रेमी एवं शोधार्थी लाभान्वित हो सकें।

शोध प्रविधि :–

प्रस्तावित शोध प्रबंध के अध्ययन के लिए निम्नलिखित शोध विधियों का अनुसरण किया जाएगा –

- विश्लेषणात्मक एवं समीक्षात्मक विधि के अनुप्रयोग से विदेशी लेखकों की कृतियों का अध्ययन प्रस्तुत करना।
- साक्षात्कार एवं पत्राचार विधि के माध्यम से संबंधित विद्वानों के बीच पत्राचार माध्यम से जानकारी संकलित करना।
- लेखन सामग्री।
- इंटरनेट से सहायता लेना।

- पुस्तकालय विधि के द्वारा उपलब्ध पुस्तकों एवं पत्र– पत्रिकाओं का अध्ययन करना।
- इसके अलावा अन्य विधियों का उपयोग किया जायगा।

उपकरण –

निम्नलिखित सामग्री शोध कार्य के लिए उपयोग में लाए जा सकते हैं –

- पत्र पत्रिकाएं।
- इंटरनेट , कम्प्यूटर , प्रिंन्टर ,वीडियो आदि।
- टेप रिकार्डर आदि जरूरत के अनुसार।
- मोबाइल।

प्रस्तुत शोध की उपादेयता :–

अध्याय विभाजन

खड़िया भाषा एवं साहित्य के विकास में विदेशी लेखकों का योगदान

आभार –

प्रस्तावना –

1 प्रथम अध्याय – खड़िया भाषा का सामान्य परिचय

1:1 खड़िया भाषा के उत्पति की अवधारणा।

1:2 खड़िया भाषा का वर्गीकरण।

1:3 खड़िया भाषा का वैशिष्ठय।

2 द्वितीय अध्याय – खड़िया साहित्य का सामान्य परिचय।

2:1 .खड़िया साहित्य का वर्गीकरण।

2:2 . खड़िया साहित्य का वैशिष्ठ्य।

3 तृतीय अध्याय – खड़िया भाषा एवं साहित्य के विकास की परम्परा।

3:1 खड़िया भाषा के विकास की परम्परा।

3:2 खड़िया साहित्य के विकास की परम्परा।

4 चतुर्थ अध्याय – खड़िया भाषा के विकास में विदेशी लेखकों का योगदान।

4:1 खड़िया ध्वनि विज्ञान

4:2 खड़िया व्याकरण

4:3 खड़िया शब्द विज्ञान

5 पंचम अध्याय – खड़िया साहित्य के विकास में विदेशी लेखकों का योगदान।

5:1 खड़िया गद्‌य साहित्य

5:2 खड़िया पद्‌य साहित्य

6 षष्ठम अध्याय – कुछ विदेशी लेखकों का जीवन वृत एवं रचनाएं।

1. एच. जी. पीन्नो

2. जॉन माइकेल पीटरसन

3. एल.कार्डोन

4. डब्ल्यू. जी. आर्चर

5. ई. टी. डाल्टन

6. जॉन बी. हॉफमैन

7. हेनरी फ्लोर

उपसंहार –

नोट – आवश्यकता होने पर शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्तन किए जा सकते हैं।

शोध निर्देशिका

डॉ. मेरी एस.सोरेंग

विभागाध्यक्ष खड़िया

स्नातकोत्तर खड़िया भाषा विभाग

रांची विश्वविद्यालय,रांची

शोध निर्देशक
स्नातकोत्तर खड़िया भाषा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधकर्ता

बासिल किड़ो

एम.ए. खड़िया

यू. जी. सी. नेट

स्नातकोत्तर विभाग , खड़िया

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

English

1. Banerjee G.C. — The Introduction to Kharia
2. Biligiri S.H. — Kharia Phonology,Grammer and Vocabulary
3. Cardon L. — The Kharias and their Culture
4. Dalton E.T. — The Cols of Chotanagpur
5. Driver A.P. — Notes on some Kolarian Tribe
6. Dungdung Anthony — The Kharias of Chotanagpur
7. Floor H.,Ghesins & Duart G. — Dictionary of the Kharia language
8. Hoffman J.B. — Encyclopeadia Mundarica
9. Pinoo H.J. — Kharia Texte Prose and Poetry
10. Roy S.C. — The Kharias
11. Vidyarthi L.P. & Upadhaya — The Kharias: Then and Now

हिन्दी पुस्तकें :–

1.कुल्लु, अनिल वीरेन्द्र	खड़िया साहित्य का इतिहासः
2. ग्रियरसन, जोर्ज	भारत का भाषा सर्वेक्षण
3.टेटे, वंदना	आदिवासी साहित्य परंपरा और प्रयोजन
4.तिवारी, भोलानाथ	भाषा साहित्य
5.बा', जुलियुस	खड़िया ध्वनिशात्र
6.शर्मा, देवेन्द्रनाथ	भाषा विज्ञान की भूमिका
7.शर्मा, रामविलास	भाषा और समाज
8. साहु, आर. पी.	देश विदेश में खड़िया रीति रिवाज
9. सिंह, नागेश्वर	हिंदी शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में मिशरियों का योगदान

पत्र – पत्रिकाएं

1.तुञलोङ	संत जेवियर ट्राइबल रिसर्च सेन्टर रांची 2017
2.वागर्थ	भारतीय भाषा परिषद , कलकता. वर्ष29 अंक 326, 2023.
3.युद्धरत आम आदमी	जन साहित्य का दस्तावजी त्रैमासिक, रॉची,खंड 2.
4.स्मारिका	झारखण्डी भाषा साहित्य परिषद,समाज विकास केन्द्र, रांची – 23–24 अगस्त 1997.
5.Xavier Research Journal	st. Xavier's College,Ranchi – 2018